मधुमक्खियों पर कीटनाशक के असर की गलतबयानी

नियोनिकोटिनॉइड कीटनाशकों का एक समूह है जिसका काफी उपयोग फसलों को कीड़े-मकोड़ों से बचाने में किया जाता है। कुछ वर्ष पहले किए गए अध्ययनों से पता चला था कि इस वर्ग के कीटनाशक मधुमक्खियों पर बहुत बुरा असर डालते हैं और यूएस में इन पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

मगर 2 वर्ष पहले एक अध्ययन में दावा किया गया कि कीटनाशक और मधुमक्खी छत्तों की सेहत के बीच कोई सम्बंध नहीं है। यूके की खाद्य व पर्यावरण अनुसंधान संस्था की हेलन थॉम्पसन द्वारा किए गए इस अध्ययन के आधार पर यूके के पर्यावरण मंत्री ने कहा था कि इन कीटनाशकों पर प्रतिबंध का कोई औचित्य नहीं है। गौरतलब है कि पूरी दुनिया में मधुमक्खियों के छत्तों की सेहत चिंताजनक है। मधुमक्खियां कई फसलों के परागण में मदद करती हैं।

अब पता चला है कि उपरोक्त अध्ययन के निष्कर्ष उसके अपने आंकड़ों से मेल नहीं खाते हैं। थॉम्पसन ने किया यह था कि अरंडी के खेतों के आसपास मधुमक्खी के छत्ते रखे थे। कुछ खेतों में कीटनाशक का छिड़काव किया गया था जबकि कुछ खेत वैसे ही छोड़ दिए गए थे। इसके आधार पर उन्होंने जो शोध पत्र लिखा था वह सरकार द्वारा ऑनलाइन प्रकाशित किया गया था मगर समकक्ष समीक्षा की प्रणाली से नहीं गुज़रा था।

हाल ही में ससेक्स विश्वविद्यालय के डेव गुल्सन ने थॉम्पसन के आंकड़ों का एक बार फिर से विश्लेषण किया। गुल्सन का कहना है कि वास्तव में थॉम्पसन के आंकड़े दर्शाते हैं कि कीटनाशक छिड़काव वाले खेतों के आसपास के मधुमक्खी के छत्तों की सेहत पर काफी बुरा असर हुआ था। जैसे गुल्सन ने पाया कि नियोनिकोटिनॉइड छिड़काव वाले खेतों के आसपास के छत्तों में नई रानी-मक्खियों की संख्या 50 प्रतिशत कम थी। एक उल्लेखनीय बात यह भी पता चली कि जिन छत्तों के बारे में दावा किया गया था कि वे कीटनाशकों से मुक्त थीं, उनमें भी कीटनाशक अवशेष पाए गए थे। इस कारण से दोनों तरह के छत्तों में अंतर का कम दिखना स्वाभाविक है।

जहां कई वैज्ञानिक कह रहे हैं कि इस तरह के शोध पत्र विज्ञान की छवि को धूमिल करते हैं, वहीं कुछ वैज्ञानिक कह रहे हैं कि इस तरह से आंकड़ों की भिन्न या परस्पर विपरीत व्याख्या तो विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में आम बात है और इसे कोई साज़िश मानना गलत होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***